©2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

समग्र शिक्षा एवं भारतीय चिंतक

डॉ संगीता सिंह
495/1, अलोपी बाग,
इलाहाबाद।

समग्र शिक्षा नाम से ही स्पष्ट है कि इस प्रकार की शिक्षा में शिक्षार्थी के सभी पक्षों अर्थात् व्यक्ति के पूर्ण विकास का ध्यान रखा जाता है।

इस शिक्षा का उद्देश्य बालक का बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास करना होता है। गॉधी जी ने 'हरिजन' में लिखा है कि 'आदमी साक्षरता अथवा विद्वता से आदमी नहीं बनता, बल्कि सच्चे जीवन के लिए ली गयी शिक्षा से बनता है। मैं शिक्षा के साहित्यिक पहलू की तूलना में उसके सांस्कृतिक पहलू को कहीं अधिक महत्व देता हूॅ।'[1] शिल्प, कला, स्वास्थ्य और शिक्षा सभी को एक योजना में समन्वित कर देना चाहिए। नयी तालीम इन चारों का सुन्दर मिश्रण है और गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक मनुष्य के सम्पूर्ण शिक्षा को अपने में समाहित करती है। मेरी नयी तालीम धन पर निर्भर नहीं है।[2] इसे चलाने का खर्च स्वयं शिक्षा प्रक्रिया से ही निकल आना चाहिए। इसकी जो भी आलोचना हो, मैं यह जानता हूॅ कि शिक्षा वही है जो 'आत्मनिर्भर' हो।[3]

प्राचीन काल से ही शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का स्रोत रही है। वर्तमान मानव शिक्षा के कारण ही आज सभ्यता के उच्च शिखर पर पहुॅच सका है। मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने का श्रेय भी शिक्षा को ही प्राप्त है। प्रायः शिक्षा का अर्थ पाठशाला या विद्यालय में विधिवत अध्ययन करनें से ही लिया जाता है। विद्वानों का विचार है कि विद्यालय में ही नहीं अपितु परिवेश एवं घर से भी बालक शिक्षा प्राप्त करता है। अर्थात् शिक्षा पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित नहीं है। गॉधी जी ने हरिजन में लिखा था ''आज शुद्ध जल , शुद्ध पृथ्वी और शुद्ध वायु हमारे लिये अपरिचित हो गये हैं।'' हम आकाश और सूर्य के अपरिमेय मूल्य को नही पहचानते। अगर हम पंच तत्वों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करें और सही तथा सन्तुलित भोजन करें तो हम युगों का काम पूरा कर सकेगें। इस ज्ञान के अर्जन के लिए न डिग्रियों की आवश्यकता है न करोड़ों रूपये की। इसके लिए ईश्वर में जाग्रत विश्वास चाहिए, सेवा करनें का उत्साह चाहिए, पंचतत्वों से परिचय चाहिए और आधार विज्ञान की जानकारी चाहिए। इन्हे स्कूलों और कालेजों में समय बर्बाद किये बिना भी अर्जित किया जा सकता है।[4] गॉधी जी ने हरिजन में लिखा है कि नये संसार की रचना के लिए शिक्षा भी नई तरह की होनी चाहिए।[5] आदमी साक्षरता अथवा विद्वता से आदमीं नहीं बनता, बल्कि सच्चे जीवन के लिए ली गयी शिक्षा से बनता है।[6] गॉधी जी ने लिखा है कि 'मेरा आग्रह है कि वयस्क मताधिकार के साथ ही साथ अथवा उससे भी पहले सार्वजनिक शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। जिसका पुस्तकीय होना अनिवार्य नहीं है– पुस्तकें तो सम्भवतः उसकी सहायक की भूमिका ही निभा सकती है।'[7] गॉधी जी के उच्च मतों से स्पष्ट है कि शिक्षा पुस्तक तक ही सीमित नही है अपितु समग्र रूप से शिक्षा की आवश्यकता है।

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने भी शिक्षा की आवश्यकता व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और अध्यात्मिक विकास एवं वैयक्तिक, सामाजिक दृष्टिकोण को उन्नति के लिए ही माना है। शिक्षा के सन्दर्भ में उन्होने कहा है कि– ''सच्ची शिक्षा तो संग्रहित सामग्री के सही प्रयोग में उसकी वास्तविक प्रकृति को जानने मे और उसके जीवन के साथ एवं वास्तविक जीवन रक्षा के रूप में निर्माण करनें मे होती है।''[8] टैगोर का कहना है कि पाठ्यक्रम को इतना व्यापक होना चाहिए कि बालक के जीवन के सभी पक्षों का विकास हो सके। इसलिए पाठ्यक्रम विषय केन्द्रित न होकर अनुभव केन्द्रित होना चाहिए। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत इतिहास, भूगोल, विज्ञान, साहित्य, प्रकृति अध्ययन के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ जैसे– ड्राइंग, परिभ्रमण, प्रयोगशाला के कार्य, गायन, नृत्य, प्रातः कालीन प्रार्थना, सरस्वती मालायें, छात्रों का स्वशासन, खेल–कूद, समाज सेवा आदि क्रियाएँ पाठ्यक्रम के अंग की भॉति होनी चाहिए।[9] गुरूदेव के समस्त शिक्षा सिद्धांत विश्व बंन्धुत्व की भावना से ओत–प्रोत थी। उनकी दृष्टि में ''शिक्षा मस्तिष्क को अंन्तिम सत्य को पाने योग्य बनाती है। वह हमें धूल के बन्धन से मुक्ति दिलाती है और वस्तुनिधि अथवा शक्तिनिधि की अपेक्षा आंन्तरिक ज्योति एवं प्रेम प्रदान करती है। वह सत्य को अपना बनाती है और इसे अभिव्यक्ति देती है।''[10] गॉधी जी की भॉति टैगोर भी पुस्तकीय शिक्षा की अपेक्षा शिक्षा के समग्र रूप पर ध्यान देने के पक्षधर थे। इनके अनुसार ये सभी चीजें पाठ्यक्रम में शामिल होनी चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि Man making and character building, यानि व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण शिक्षा के मूल उद्देश्य है। व्यक्ति का विकास एक ठीक दिशा में होता है तो उसी प्रकार उसका चरित्र बनता है। कोठारी ने कहा है कि उपनिषद् में दिये गये 'पचकोश' के आधार पर ही व्यक्तित्व विकास होता है और उसका परिणाम चरित्र निर्माण है। पंचकोश के आधार पर बालक का विकास होगा तो वह बालक निःस्वार्थी होगा, सेवाभावी होगा, शरीर से सबल होगा, यही तो चरित्र है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली कभी–कभी विल्कुल विपरीत दिखती है। अधिक पढ़ा–लिखा व्यक्ति कई बार अधिक भ्रष्ट दिखता है। जीवन की नीव ही शिक्षा है इसलिए देश को बदलना है तो सबसे पहले शिक्षा को बदलना होगा।

गॉधी जी ने कहा है कि शिक्षा से मै यह अर्थ लेता हूँ कि वह बच्चे और मनुष्य की काया, बुद्धि और आत्मा में जो कुछ भी श्रेष्ठ है, उसे समग्र रूप से उभार दे। साक्षरता न तो शिक्षा की परिणति है और न उसका आरम्भ। यह तो केवल स्त्री अथवा पुरूष को शिक्षित करने के साधनों मे से एक है। साक्षरता अपने आप में शिक्षा नही है। इसलिए मै बच्चे की शिक्षा का आरम्भ उसे किसी उपयोगी दस्तकारी को सिखाकर करूँगा, और यह कोशिश करूँगा कि वह प्रशिक्षण आरम्भ होते ही कोई न कोई चीज बनाने लगे..... मेरी धारणा है कि शिक्षा की ऐसी प्रणाली के अन्तर्गत बुद्धि और आत्मा का अधिकतम विकास किया जा सकता है। बस यह है कि आज की तरह दस्तकारी की शिक्षा केवल मौलिक रूप से न दी जाए, बल्कि वैज्ञानिक विधि से दी जाय अर्थात् बच्चों को हर प्रक्रिया के बारे में यह मालूम होना चाहिए कि वह किस लिए की गई।[11]

गॉधी जी की तरह टैगोर भी बच्चों को दस्तकारी एवं जीवनोपयोगी शिक्षा देने पर बल देते हैं। आज प्रधानमंत्री मोदी भी इसी तरह की शिक्षा के पक्षधर है।

भारतीय विद्वान शिक्षा का माध्यम अपनी लोकभाषा को रखने के पक्षधर हैं। वे अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा देने के पक्षधर नहीं थे। गॉधी जी ने लिखा है कि ''भारतीय मानस का अधिकतम विकास अंग्रेजी के ज्ञान के बिना सम्भव होना चाहिए''।[12] गॉधी जी ने आगे कहा कि ''अंग्रेजी की शिक्षा जिस रूप में हमारे यहॉ दी गई है उसने अंग्रेजी पढ़े–लिखे भारतीयों का दुर्बलीकरण किया है, भारतीय विद्यार्थियों की स्नायुविक ऊर्जा पर जबर्दस्त दबाव डाला है, और हमें नकलची बना दिया है..... अनुवादकों की जमात पैदा करके कोई देश राष्ट्र नहीं बन सकता।''[13]

गॉधी जी की तरह ही टैगोर भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी के विरूद्ध थे। वे कहते थे कि अंग्रेजी भाषा भारतीय छात्रों के लिए भार स्वरूप है। अंग्रेजी की प्रधानता ने हमारी समाज में वर्गभेद की ऐसी खाई बना दी है जिसके फलस्वरूप हमारी सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था विश्रृंखल हो गयी है। टैगोर का कहना है कि ''मातृ–भाषा तो माता के दूध के समान कार्य करती है। इसके अभाव में कोई शिक्षा कभी जीवित नही रह सकती।'' मातृभाषा के प्रबल समर्थक होते हुए भी टैगोर ने भारत के लिए अंग्रेजी की उपयोगिता स्वीकार किया है। उन्होने पाश्चात्य विज्ञानों से सम्पर्क एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए उसका नियमित अध्ययन अनिवार्य समझा। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी को उन्होनें अज्ञानता, अंधविश्वास तथा मूढता को दूर करनें एवं विज्ञान के आलोक में पहुचानें को उत्कृष्ट साधन माना। अंग्रेजी की शिक्षा को वे मातृभाषा का पूरक मानते थे।[14] आज देश भी इस बात को समझ रहा है। इसीलिए प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में प्रदान करनें को कही जा रही है। सरकारें भी इसका पालन कर रही हैं। भाषा का माध्यम केवल भावनात्मक विषय नहीं है वरन् यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। भारत सरकार के राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र की प्रो0 नलिनी सिंह ने मस्तिष्क पर अनुसंधान किया है। उनके अनुसंधान के दो पक्ष थे। एक पक्ष था हिन्दी में बोलने , लिखनें, पढ़नें वाले बच्चे। शोध के परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र इस निष्कर्ष पर पहुॅचा कि जो बच्चे केवल अंग्रेजी में बोलते, लिखते और पढ़ते हैं उनका केवल बायॉ मस्तिष्क सक्रिय है। परन्तु जो बच्चे हिन्दी में बोलते, लिखते, पढ़ते हैं उनका दोनो मस्तिष्क सक्रिय है। स्पष्ट है वैज्ञानिक शोध भी सिद्ध कर रहा है कि भारतीय बच्चे हिन्दी में अच्छी तरह से मस्तिष्क का विकास कर सकते है।

इस प्रकार से समग्र शिक्षा का अभिप्राय भारतीय चिन्तकों की दृष्टि में बच्चे के सम्पूर्ण विकास से है। इसी को ध्यान में रखकर आज भारत में बच्चों को प्राकृतिक परिवेश में रहकर बिना डर–भय के मातृभाषा में शिक्षा देने पर जोर दिया जा रहा है। सम्भवतः तभी बच्चों के मस्तिष्क का सम्पूर्ण विकास होगा।

सन्दर्भ

1. हरिजन– 14-9-1946, पृ -341।
2. यंग इंडिया– 08-9-1926, पृ -5।
3. वही– 22-9-1920, पृ -3।
4. हरिजन– 1-9-1946, पृ -2506।
5. वही– 19-1-1947, पृ -494।
6. वही– 02-02-1947, पृ -3।
7. वही– 02-03-1947, पृ -46।
8. डॉ0एस0के0 पाल, प्रो0 लक्ष्मी नारायण गुप्त– ''महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री''– कैलाश प्रकाशन इलाहाबाद, पृ–59।
9. डॉ0 राम सकल पाण्डेय– शिक्षा की दार्शनिक एवं सामाजिक पृष्ठ भूमि– पृ–224।
10. परमेश्वर प्रसाद सिंह– संसार के महान शिक्षा शास्त्री– सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली – पृ–29।
11. हरिजन– 31-7-1937, पृ -197।
12. यंग इंडिया– 02-02-1921, पृ -34।
13. वही– 27-04-1921, पृ -130।
14. डॉ इन्दिरा ग्रोवर– संसार के महान शिक्षा शास्त्री– पृष्ठ– 174–175 ।